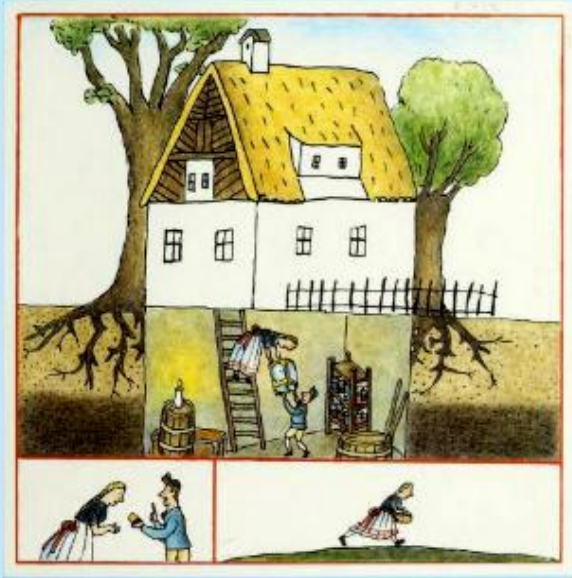


बातूनी और गप्पी

एक जर्मन लोककथा



गर्दा, हिंदी : विदूषक

बातूनी और गप्पी

एक जर्मन लोककथा





बहुत पुराने ज़माने की बात है. एक गरीब किसान अपनी घोड़ा-गाड़ी में जंगल से लकड़ी काटने जा रहा था. जंगल के एक किनारे पर एक बहुत बड़ा बाँझ का पेड़ था. उस पेड़ के नीचे कोहरे में एक बूढ़ी औरत बैठी थी. उसके पास में एक लोहे का संदूकची थी.

औरत ने किसान को आवाज़ दी. वैसे वो किसान काफी डरपोक था और वो बुढ़िया की आवाज़ को अनसुनी करके आगे बढ़ जाता. पर जब उसने बुढ़िया की बात सुनी तब वो रुका.





“देखो मुझपर किसी ने जादू-टोना किया है,” औरत ने कहा, “तुम मुझे उससे छुड़ा सकते हो और खुद के लिए भी कुछ कमाई कर सकते हो.”

फिर उस औरत ने कहा, “तुम चाहो तो इस लोहे की संदूकची को अपने घर ले जा सकते हो. इसमें सोने के सिक्के भरे हैं.”

“मुझे यह उपहार लेने में बहुत खुशी होगी,” किसान ने आश्चर्यचकित होते हुए कहा.

“सिर्फ एक शर्त है,” बूढ़ी औरत ने कहा. “तुम इसके बारे में किसी और से एक शब्द भी नहीं कहना.”

“मैं किसी से कुछ नहीं कहूँगा?” किसान ने गुस्से में कहा. “तुम क्या मुझे गप्पी और बातूनी समझती हो?”

फिर बूढ़ी औरत ने संदूकची को घोड़ागाड़ी में रखवाने में किसान की मदद की. उसके बाद किसान अपनी गाड़ी में बैठकर गाँव की तरफ चला.

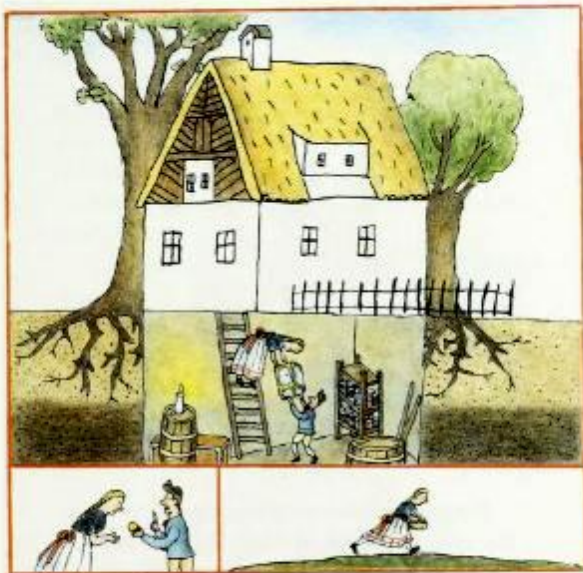




किसान ने घर पहुँचकर गाड़ी से उतरते ही चिल्लाकर अपनी पत्नी से कहा, “तुम यकीन नहीं करोगी कि आज मैं क्या लाया हूँ.” फिर अपनी आवाज़ को एकदम धीमे करते हुए उसने कहा, “मैं और किसी को यह बात नहीं बताऊँगा, पर क्योंकि तुम मेरी पत्नी हो इसलिए तुम्हें बता रहा हूँ. तुम इस संदूकची को देख रही हो? वो ऊपर तक सोने के सिक्कों से भरी है.”

“मुझे यकीन नहीं हो रहा है,” फिर किसान की पत्नी ने विस्मय से अपनी हथेलियों को गालों पर मारकर ताली बजाई.

“अब हम गरीबी में अपने दिन नहीं बिताएंगे,” किसान ने गर्व से कहा. “चलो आज कुछ अच्छा खाना बनाओ. हमने महीनों से गोشت नहीं चखा है.”



पत्नी ने किसान की सहायता की और वो दोनों संदूकची को कोठरी में ले गए. फिर किसान ने पत्नी को सोने की एक मोहर दी जिसे लेकर वो बाज़ार से सामान लाने गई. जब वो लौटकर आई तो उनके किचन से स्वादिष्ट खाने की महक चारों तरफ फैल रही थी.



उस महक को सूंघकर कुछ समय बाद पड़ोसिन भी उनके घर पर आई. “तुम्हारे घर में आज क्या स्वादिष्ट खाना पक रहा है?” उसने पूछा.

किसान से अपनी खुशखबरी दबाए नहीं दब रही थी. “देखो पड़ोसिन,” उसने कहा. “क्या तुम इस रहस्य को खुद तक सीमित रख सकती हो?”

“बिल्कुल,” पड़ोसिन ने कहा. “क्या तुम मुझे गप्पी और बातूनी समझते हो?”

“बिल्कुल नहीं,” किसान ने कहा. “इसीलिए मैं तुम्हें यह गोपनीय बात बता रहा हूँ. पर इसके बारे में तुम किसी से बिल्कुल ज़िक्क तक मत करना! ज़रा सोचो कि आज सुबह मुझे जंगल में क्या मिला?”

“क्या?” पड़ोसिन की आँखें उत्सुकता से फूल गईं.

“मुझे सोने की मोहरों से भरी एक संदूकची मिली. हाँ, सचा!”

“क्या तकदीर है तुम्हारी!” पड़ोसिन ने कहा. फिर उसने आश्चर्य से ताली बजाई. “यह अच्छी बात है कि तुमने इसके बारे में किसी और को नहीं बताया. यहाँ लोग एक-दूसरे से बहुत जलते हैं. मैं ज़रा जल्दी में हूँ. मैं अब चलती हूँ.”





पड़ोसिन जल्दी से लौटी, पर वो अपने घर नहीं गई. वो दौड़ती हुई अपने भाई के घर गई और चिल्लाई, “क्या तुम यकीन करोगे! सामने वाले किसान को आज सुबह जंगल में सोने की मोहरों से भरी एक संदूकची मिली है. पर तुम उसके बारे में किसी और को नहीं बताना!”

“नहीं, मैं किसी को नहीं बताऊँगा,” पड़ोसिन के भाई ने कहा.
“क्या तुम मुझे गप्पी और बातूनी समझती हो?”



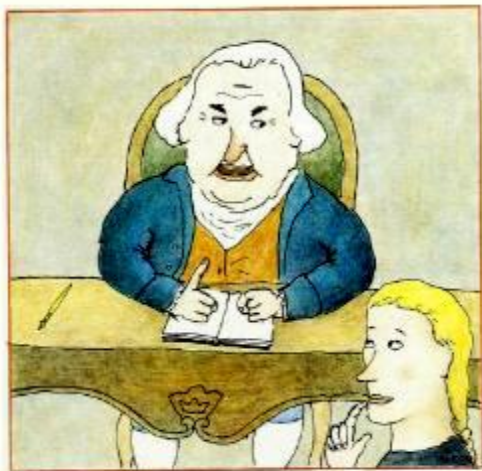
इस तरह यह खबर फैलती गई. गाँव के कसाई, सब्जीवाले, दूधवाले के साथ-साथ हरेक गाँववासी को यह बात पता चल गई. जल्दी ही यह खबर मजिस्ट्रेट साहिब के कानों तक पहुंची.





मजिस्ट्रेट साहिब ने किसान को बुलाया. पर किसान बहुत शर्मीला था इसलिए उसने अपनी जगह पर अपनी पत्नी को भेजा.

“देखो, बिल्कुल झूठ मत बोलना,” मजिस्ट्रेट साहिब ने कहा.
“तुम्हारे पति ने सोने की मोहरों से भरी एक संदूकची चुराई है. उसे तुरन्त मेरे हवाले करो.”



“ज़नाब, यह बिल्कुल गलत अफवाह है,” किसान की पत्नी ने कहा. “मेरा पति बहुत गरीब पर बिल्कुल ईमानदार है. उसने कुछ भी नहीं चुराया है.”

“यह तुम क्या कह रही हो,” मजिस्ट्रेट साहिब ने कहा. “उसने यह बात खुद लोगों को बताई है.”

“मेरा पति बड़ा गप्पी और बातूनी ज़रूर है!” किसान की पत्नी ने हँसते हुए कहा. “साब, उसकी बात पर यकीन न करें. वो डींग मारने में उस्ताद है.”

“चलो हम जल्द ही सच्चाई का पता लगाएंगे,” मजिस्ट्रेट साहिब ने कहा. “दो हफ्ते बाद फिर से कचेहरी खुलेगी. तब तुम हाज़िर होना.”

जब पत्नी घर पहुंची तब किसान खलिहान में काम कर रहा था. फिर पत्नी चुपचाप कोठरी में गई और उसने संदूकची में से एक सोने का सिक्का निकाला. उसे लेकर वो शहर में गई. वहां दोनों मिठाइयों की दुकानों में उसे जितने भी सफ़ेद बालूशाही मिले वो उसने खरीदे.

घर लौटने से बाद पत्नी ने झांककर देखा. उसका पति अभी भी खलिहान में ही था. फिर उसने पूरे बगीचे में, गेट के पास और पेड़ों के नीचे बालूशाही बिखराए. उसने कुछ बालूशाही टीन की छत पर भी बिखरा दिए.



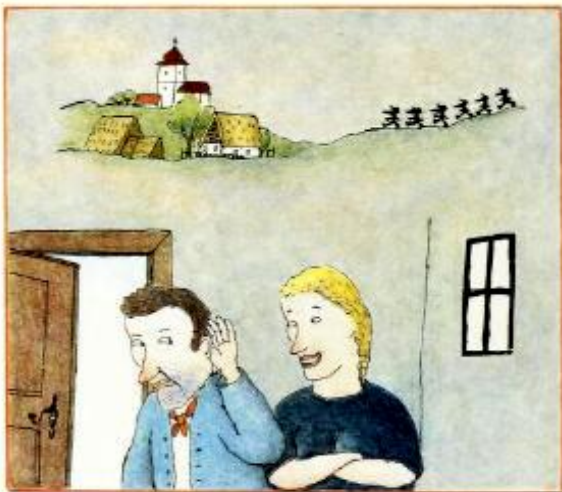
फिर वो अपने पति के पास दौड़ी-दौड़ी गई और उसने कहा, “ज़रा देखो! बाहर क्या हुआ है! भगवान ने हमारे घर में बालूशाही बरसाए हैं!”

“क्या बालूशाहियों की बारिश हुई है?” पति ने पूछा. “कहीं तुम पगला तो नहीं गई हो?”

“अगर तुम्हें मेरी बात पर यकीन नहीं है तो तुम खुद बाहर आकर देखो!” पत्नी ने कहा.



किसान दौड़ा-दौड़ा बगीचे में आया. जब उसे सब जगह बालूशाही बिखरे देखे तब उसे बहुत आश्चर्य हुआ. उसने सब बालूशाही उठाए. वो इतने सारे थे कि उससे पूरी बाल्टी भर गई.



कुछ दिनों बाद पत्नी ने किसान से कहा, “सुनो, मुझे बहुत डर लग रहा है. मैंने सुना है कि राजा ने दूर-देश से सिपाही बुलाए हैं. उन सिपाहियों की नुकीली चाँचे हैं जिन्हें चुभो-चुभोकर वो लोगों को मार डालते हैं. आज वो हमारे गाँव से गुजरने वाले हैं. हमें कहीं छिप जाना चाहिए. तुम कपड़े धोने वाले इस बड़े टब के नीचे छिप जाना. मैं ऊपर के कमरे की अटारी में छिप जाऊँगी. जब उन्हें घर में कोई नहीं मिलेगा तो फिर वो सिपाही झक मारकर चले जाएँगे.



डरपोक किसान ने भारी टब को पास के खेत तक ले जाने में अपनी पत्नी की सहायता की. उसके बाद किसान उस टब के नीचे छिप गया.



“बिल्कुल चुपचाप बैठना,” किसान की पत्नी ने उसे चेतावनी दी. उसके बाद वो खलिहान में से मक्का लाई. उसने मक्का को टब के चारों ओर बिखेर दिया. फिर उसने दबड़े की सारी मुर्गियों को बिखरे दानों के पास छोड़ दिया.

मुर्गियों ने अपनी चोंच ज़मीन पर मार-मारकर मक्का के दानों को चुगा. जल्द ही सारी मक्का सफाचट हो गई. फिर मुर्गियां खेत में घुस गईं.





कुछ देर बाद किसान की पत्नी ने टब पर दस्तक दी और कहा, “अब तुम बाहर आ जाओ. भगवान का शुक्र है कि हम जिंदा और सुरक्षित हैं. सिपाही मुझे भी नहीं ढूँढ पाए.”

किसान ने कहा, “मुझे तो वाकई में बहुत डर लग रहा था. उनमें से कुछ सिपाहियों ने अपनी चोंचे मेरे टब पर भी मारी. तब मुझे लगा जैसे मेरी अंतिम घड़ी करीब आ गई हो.”



दो हफ्ते बीतने के बाद किसान और उसकी पत्नी दोनों कचेहरी गए. किसान ने उसपर लगे सभी आरोपों को नकारा. नहीं! मैंने कुछ भी नहीं चुराया है. पूरी घटना, उसके अनुसार बिल्कुल वैसे ही घटी थी जैसे उसने अपने पड़ोसी को सुनाई थी.

“अच्छा प्रिय, यह बताओ कि वो सोने की मोहरे तुम किस दिन घर लाये थे?” किसान की पत्नी ने उससे पूछा.

“क्या तुम्हें याद नहीं?” किसान ने पत्नी से कहा. “जिस दिन भगवान ने हमारे घर में बालूशाहियों की बारिश की थी, उसके बस दो दिन पहले.”



उसके बाद मजिस्ट्रेट और अन्य जजों ने एक-दूसरे को देखा और अपने-अपने सिर हिलाए.

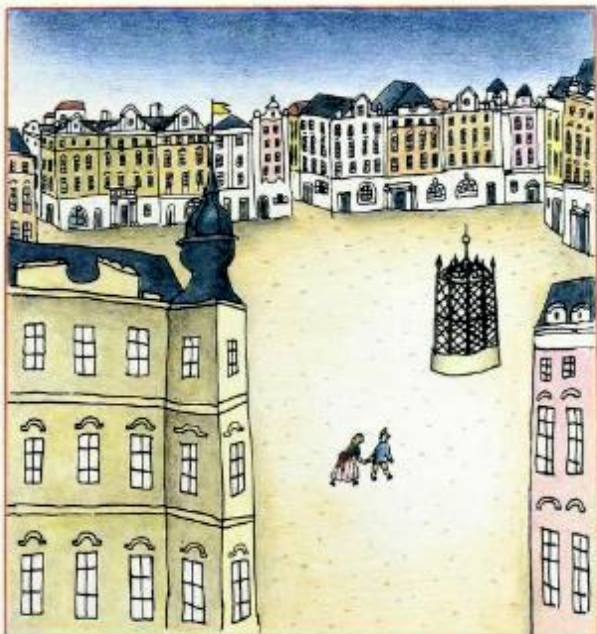
“उसके बाद राजा के लम्बी चोंच वाले सिपाही आए. अपनी लोहे की चोंचों को वो कपड़ों वाले टब पर लगातार मार करते रहे.”





सब लोगों ने दुबारा अपने-अपने सिर हिलाए. “वो आदमी बिल्कुल सिरफिरा लगता है,” उन्होंने एक-दूसरे के कानों में फुसफुसाया. फिर मजिस्ट्रेट ने किसान की पत्नी से कहा,

“तुमने ठीक ही कहा था, यह किसान गप्पे मारने में उस्ताद है. चलो, अब तुम दोनों घर जाओ. हाँ, आगे से किसी भी गलत काम में हिस्सा मत लेना.”





उसके बाद किसान और उसकी पत्नी घर गए और फिर सारी ज़िन्दगी आराम और खुशी से रहे.



